Inspira- Journal of Modern Management & Entrepreneurship (JMME)
p-ISSN : 2231–167X, Impact Factor : 2.3982, Volume 07, No. 03, July, 2017, pp. 357-360

हैफेड की कार्यप्रणाली का आलोचनात्मक मूल्यांकन

डॉ. कविता चौधरी*

भारतीय अर्थव्यवस्था अतीत काल से लेकर वर्तमान तक कृषि प्रधान अर्थव्यवस्था रही है तथा ऐसी संभावना है कि आने वाले कतिपय दशकों में भी कृषि का इस अर्थव्यवस्था में महत्वर्पूण स्थान रहेगा स्वतंत्रता प्राप्ति के 70 वर्ष पश्चात् भी लगभग 55 प्रतिशत लोग अपनी आजीविका के लिए कृषि पर र्निभर करते है तथा राष्ट्रीय आय में भी इसका सार्थक योगदान है। वस्तुतः कृषि भारतीय अर्थव्यवस्था की रीढ़ है। भारत में कृषि सिधुंघाटी सभ्यता के दौर से की जाती रही है। 1960 के बाद कृषि के क्षेत्र में हरित क्रांति के साथ नया दौर आया 1960 के दशक के मध्य तक पारम्परिक बीजो का प्रयोग किया जाता था। जिनकी उपज अपेक्षाकृत कम थी सिंचाई की आवश्यकता कम पड़ती थी उर्वरकों के रुप में गाय एवं भैस के गोबर तथा पत्तियों की खाद आदि का प्रयोग किया जाता था। साथ ही परम्परागत औजार एवं संशाधन कृषि के काम में लिए जाते थे।

कृषि के चहुमुखी विकास एवं खाद्यान्नों में आत्म निर्भर बने रहने के लिए वर्ष 1966–67 में हरित क्रांति का प्रार्दुभाव हुआ। मुख्य रुप से गेंहु चावल गन्ना एवं अन्य उत्पादों में आशातित वृद्धि हुई इस हरित क्रांति के फलस्वरुप यह देश कृषि उत्पादन में आत्म निर्भर हो गया। हरियाणा कृषि प्रधान राज्य है। दो तिहाई से ज्यादा जनसंख्या प्रत्यक्ष रुप से कृषि पर निर्भर करती है। यहां औद्योगिक विकास भी काफी हदतक कृषि पर निर्भर है। छठे दशक में जब देश में हरित क्रांति शुरु हुई उसका सीधा प्रभाव हरियाणा राज्य में देखने को मिला। नवीन तकनीक, रसायनिक खाद, उन्नत बीजो का प्रयोग, सिंचाई के साधनों में आशातीत वृद्धि हुई, लेकिन कृषक वर्ग असंगठित होने उनकी सौदेबाजी की शक्ति कम होने एवं सीमित वित्त व्यवस्था की वजह से उनके द्वारा तैयार की गई फसल का उचित मूल्य नही मिल पाता था।

अतः कृषको को कृषि पदार्थो के लाभदायक मूल्य दिलवाने एवं कृषि विपणन व्यवस्था के लिए आधारभूत सुविधाओं के निर्माण कार्य करने के लिए हैफेड की स्थापना की गई। हैफेड हरियाणा राज्य में सहकारी कार्य करने की शीर्ष संस्था है। इस आलेख का मुख्य उद्देश्य कृषि विपणन व्यवस्था में हैफेड की भूमिका का मूल्यांकन करना है। वर्तमान अध्ययन में हरियाणा राज्य में कृषि विपणन व्यवस्था में हैफेड की भूमिका का मूल्यांकन करने का प्रयास किया गया है। यह आलेख हरियाणा के रोहतक जिले के 100 कृषकों से प्राप्त सूचना पर आधारित है।

हैफेड का संगठनात्म ढाँचा

देश में योजनाकाल में सहकारी विपणन समितियों का तेज गति से विकास हुआ। राष्ट्रीय स्तर पर सहकारी विपणन की शीर्ष संस्था के रुप में नैफेड की स्थापना की गई जो राष्ट्रीय स्तर पर सहकारी विपणन व्यवस्था को मजबूती प्रदान करने एवं विभिन्न विपणन सहकारी समितियों एवं संस्थानों में तालमेल एवं समन्वय बैठाने के लिए कृत संकल्प है। दूसरी और प्रत्येक राज्य में सहकारी विपणन व्यवस्था को विकसित करने के लिए राज्य स्तर पर राज्य सहकारी विपणन संघ गठित किये गये है। इस तरह के क्रय विक्रय सहकारी संघ को हरियाणा में हैफेड के नाम से जाना जाता है।

* व्याख्याता, वाणिज्य, डाईट मदीना, रोहतक, हरियाणा।